اَمَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ لَكُمْ

भला किस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और किस ने तुम्हारे लिए आसमान

مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَنْۢبَتْنَا بِهٖ حَدَآئِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ ۚ مَا كَانَ

से पानी उतारा, फिर उस से रौनक़ वाले बाग़ात को उगाया? तुम्हारी ताक़त

لَكُمْ اَنْ تُنْۢبِتُوْا شَجَرَهَا ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ بَلْ هُمْ قَوْمٌ

नहीं थी के उस के दरख़्त तुम उगाते। क्या अल्लाह के साथ और भी माबूद हैं? बल्के वो ऐसी क़ौम है जो अल्लाह

يَّعْدِلُوْنَ ۝٦٠ اَمَّنْ جَعَلَ الْاَرْضَ قَرَارًا وَّجَعَلَ خِلٰلَهَآ

के साथ शरीक ठेहराती है। भला किस ने ज़मीन को ठेहेरने की जगह बनाया और उस के दरमियान नेहरें

اَنْهٰرًا وَّجَعَلَ لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ

बनाईं और ज़मीन के लिए लंगर रख दिए और दो समन्दर के दरमियान आड़

حَاجِزًا ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٦١ اَمَّنْ

बना दी? क्या अल्लाह के साथ और भी माबूद हैं? बल्के उन में से अक्सर जानते नहीं। भला कौन

يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوْٓءَ وَ يَجْعَلُكُمْ

परेशानहाल की दुआ को क़बूल करता है जब वो उस से दुआ करता है और तकलीफ़ दूर करता है और तुम्हें

خُلَفَآءَ الْاَرْضِ ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ۝٦٢

ज़मीन में जानशीन बनाता है? क्या अल्लाह के साथ और भी माबूद हैं? बहोत कम तुम नसीहत हासिल करते हो।

اَمَّنْ يَّهْدِيْكُمْ فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ

भला कौन है जो तुम्हें रास्ता दिखाता है खुशकी और समन्दर की तारीकियों में और कौन

يُّرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ؕ ءَاِلٰهٌ

हवाओं को बशारत देने के लिए अपनी रहमत से आगे भेजता है? क्या अल्लाह के साथ और भी माबूद हैं?

مَّعَ اللّٰهِ ؕ تَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝٦٣ اَمَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ

बरतर है अल्लाह उन चीज़ों से जिन्हें ये शरीक ठेहराते हैं। भला कौन है जो मख़लूक़ को पेहली मरतबा

ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَمَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ ءَاِلٰهٌ

पैदा करता है, फिर उस को दोबारा पैदा करेगा और कौन तुम्हें आसमान और ज़मीन से रोज़ी देता है? क्या अल्लाह

مَّعَ اللّٰهِ ؕ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝٦٤

के साथ और भी माबूद हैं? आप फरमा दीजिए के तुम अपनी दलील लाओ अगर तुम सच्चे हो।

قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الْغَيْبَ

आप फ़रमा दीजिए जो आसमानों और ज़मीन में हैं वो ग़ैब नहीं जानते सिवाए

اِلَّا اللّٰهُ ؕ وَمَا يَشْعُرُوْنَ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ﴿٦٥﴾ بَلِ ادّٰرَكَ عِلْمُهُمْ

अल्लाह के। और उन्हें ये भी पता नहीं के कब (क़ब्रों से मुर्दे) उठाए जाएंगे? बल्के उन का इल्म आख़िरत

فِي الْاٰخِرَةِ ۚ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْهَا ۚ بَلْ هُمْ مِّنْهَا عَمُوْنَ ﴿٦٦﴾ ع ٨

का हाल जानने से आजिज़ है। बल्के वो उस से शक में हैं। बल्के वो उस से अन्धे हैं।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا وَّ اٰبَآؤُنَآ اَئِنَّا

और काफ़िर लोग केहते हैं के क्या जब हम मिट्टी हो जाएंगे हम और हमारे बाप दादा, तब हम ज़िन्दा कर के

لَمُخْرَجُوْنَ ﴿٦٧﴾ لَقَدْ وُعِدْنَا هٰذَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا مِنْ قَبْلُ ۙ

निकाले जाएंगे। यक़ीनन हम से और हमारे बाप दादा से इस से पेहले इस का वादा किया गया,

اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٦٨﴾ قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ

ये तो पेहले लोगों की घड़ी हुई कहानियाँ हैं। आप फ़रमा दीजिए के तुम ज़मीन में चलो फिरो,

فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٦٩﴾ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ

फिर देखो के मुजरिमों का अन्जाम कैसा हुवा? और आप उन पर ग़म न कीजिए

وَلَا تَكُنْ فِيْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَ يَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا

और उन की मक्कारियों से तंगी में न रहिए। और ये केहते हैं के ये वादा

الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٧١﴾ قُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ رَدِفَ

कब है अगर तुम सच्चे हो? आप फ़रमा दीजिए शायद तुम्हारे क़रीब आ पहोंचा हो

لَكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿٧٢﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ فَضْلٍ

उस का कुछ हिस्सा जिस को तुम जल्दी तलब कर रहे हो। और यक़ीनन तुम्हारा रब तो इन्सानों पर

عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٧٣﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ

फ़ज़्ल वाला है, लेकिन उन में से अक्सर शुक्र अदा नहीं करते। और यक़ीनन तुम्हारा रब तो

لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٧٤﴾ وَمَا مِنْ غَآئِبَةٍ

जानता है वो चीज़ें जो उन के सीने छुपाते हैं और जिन्हें वो ज़ाहिर करते हैं। और आसमान और ज़मीन

فِي السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿٧٥﴾ اِنَّ هٰذَا

की हर मख़फ़ी चीज़ साफ़ बयान करने वाली किताब (लौहे महफ़ूज़) में है। यक़ीनन ये

الْقُرْاٰنَ يَقُصُّ عَلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اَكْثَرَ الَّذِيْ هُمْ فِيْهِ

कुरआन बनी इस्राईल के सामने बयान करता है वो अक्सर बातें जिन में वो इखतिलाफ

يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٧٦﴾ وَاِنَّهٗ لَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٧﴾

कर रहे हैं। और यक़ीनन ये ईमान वालों के लिए हिदायत और रहमत है।

اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ بِحُكْمِهٖ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ ﴿٧٨﴾

यक़ीनन तेरा रब अपने हुक्म से उन के दरमियान फ़ैसला करेगा। और वो ज़बर्दस्त है, इल्म वाला है।

فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۭ اِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِيْنِ ﴿٧٩﴾ اِنَّكَ لَا تُسْمِعُ

इस लिए आप अल्लाह पर तवक्कुल कीजिए। यक़ीनन आप वाज़ेह हक़ पर हो। यक़ीनन आप मुर्दों को नहीं

الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَاۗءَ اِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ ﴿٨٠﴾

सुना सकते और आप बेहरों को पुकार नहीं सुना सकते जब के वो पुश्त फेर कर भागते भी हों।

وَمَآ اَنْتَ بِهٰدِ الْعُمْيِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ۭ اِنْ تُسْمِعُ

और आप अन्धों को रास्ता नहीं दिखा सकते उन की गुमराही से। आप तो सिर्फ़ उसी को सुना सकते हैं

اِلَّا مَنْ يُّؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿٨١﴾ وَاِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ

जो हमारी आयतों पर ईमान रखते है और ताबेदारी करते हैं। और जब (क़यामत का) अम्र उन पर वाक़ेअ

عَلَيْهِمْ اَخْرَجْنَا لَهُمْ دَاۗبَّةً مِّنَ الْاَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ ۙ

होने वाला होगा, तो हम उन के लिए ज़मीन से एक चौपाया निकालेंगे जो उन से बात करेगा,

اَنَّ النَّاسَ كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا لَا يُوْقِنُوْنَ ﴿٨٢﴾ وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ ع ٦

के ये लोग हमारी आयतों पर यक़ीन नहीं रखते थे। और जिस दिन हम हर उम्मत में से

اُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّنْ يُّكَذِّبُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿٨٣﴾

उस जमाअत को इकट्ठा करेंगे जो हमारी आयतों को झुठलाती थी, फिर उन्हें तक़सीम किया जाएगा।

حَتّٰٓى اِذَا جَاۗءُوْ قَالَ اَكَذَّبْتُمْ بِاٰيٰتِيْ وَلَمْ تُحِيْطُوْا بِهَا عِلْمًا

यहां तक के जब वो हाज़िर होंगे, तो अल्लाह पूछेंगे क्या तुम ने मेरी आयतों को झुठलाया हालांके उन आयात का तुम ने

اَمَّا ذَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ

इल्म से इहाता नहीं किया था, या तुम क्या अमल करते थे? और उन पर बात साबित हो जाएगी

بِمَا ظَلَمُوْا فَهُمْ لَا يَنْطِقُوْنَ ﴿٨٥﴾ اَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا الَّيْلَ

उन के ज़ुल्म की वजह से, फिर वो बोल नहीं सकेंगे। क्या उन्हों ने देखा नहीं के हम ने रात बनाई

لِيَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ

ताके वो उस में आराम करें और दिन को रोशन बनाया। यक़ीनन उस में निशानियाँ हैं

لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٨٦﴾ وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَفَزِعَ مَنْ

ऐसी क़ौम के लिए जो ईमान लाती है। और जिस दिन सूर फूंका जाएगा तो घबरा जाएंगे वो जो

فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ

आसमानों और ज़मीन में हैं मगर जिन को अल्लाह चाहे।

وَكُلٌّ اَتَوْهُ دٰخِرِيْنَ ﴿٨٧﴾ وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً

और सब के सब आजिज़ बन कर उस के पास चले आएंगे। और तू पहाड़ों को देखता है तो खयाल करता है के जमे

وَّهِيَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ ؕ صُنْعَ اللّٰهِ الَّذِيْٓ اَتْقَنَ كُلَّ

हुए हैं और यही पहाड़ बादल के चलने की तरह तेज़ चलेंगे। ये अल्लाह की कारीगरी है जिस ने हर चीज़ मज़बूत

شَيْءٍ ؕ اِنَّهٗ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٨٨﴾ مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ

बनाई। यक़ीनन वो बाखबर है उन कामों से जो तुम करते हो। जो नेकी ले कर आएगा

فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَهُمْ مِّنْ فَزَعٍ يَّوْمَئِذٍ اٰمِنُوْنَ ﴿٨٩﴾

तो उस के लिए उस से बेहतर मिलेगा। और वो उस दिन की घबराहट से अमन में होंगे।

وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ ؕ

और जो बुराई को ले कर आएंगे, तो औंधे मुंह वो दोज़ख में डाले जाएंगे।

هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٠﴾ اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ

तुम्हें सज़ा नहीं दी जाएगी मगर उन ही कामों की जो तुम करते थे। मुझे तो सिर्फ यही हुक्म है के मैं इबादत करूँ

رَبَّ هٰذِهِ الْبَلْدَةِ الَّذِيْ حَرَّمَهَا وَلَهٗ كُلُّ شَيْءٍ ۫

इस शेहर के पैदा करने वाले की जिस ने उस को हरम बनाया और हर चीज़ उस की मिल्क है।

وَّاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٩١﴾ وَاَنْ اَتْلُوَا الْقُرْاٰنَ ۚ

और मुझे इस का हुक्म है के मैं मुसलमानों में से रहूँ। और ये के मैं क़ुरआन की तिलावत करूँ। तो जो

فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَقُلْ

हिदायत पाएगा तो सिर्फ़ अपनी ज़ात के लिए हिदायत पाएगा। और जो गुमराह होगा तो आप फ़रमा दीजिए

اِنَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ﴿٩٢﴾ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ سَيُرِيْكُمْ

के मैं तो सिर्फ डराने वालों में से हूँ। और आप फ़रमा दीजिए के तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, जल्द ही वो

اٰيٰتِهٖ فَتَعْرِفُوْنَهَا ؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾

तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाएगा, तो तुम उन को पेहचान लोगे। और तेरा रब बेख़बर नहीं है उन कामों से जो तुम करते हो।

اٰيَاتُهَا ٨٨ (٢٨) سُوْرَةُ الْقَصَصِ مَكِّيَّةٌ (٤٩) رُكُوْعَاتُهَا ٩

उस में ८८ आयतें हैं सूरह क़सस मक्का में नाज़िल हुई और ६ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿﴾

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

طٰسٓمّٓ ﴿١﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿٢﴾ نَتْلُوْا عَلَيْكَ

ता सीम मीम। ये साफ़ साफ़ बयान करने वाली किताब की आयतें हैं। हम आप के सामने

مِنْ نَّبَاِ مُوْسٰى وَفِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٣﴾

मूसा (अलैहिस्सलाम) और फिरऔन का कुछ हाल हक़ाइक़ समेत तिलावत करते हैं ऐसी क़ौम के लिए जो ईमान लाए।

اِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا فِى الْاَرْضِ وَجَعَلَ اَهْلَهَا شِيَعًا

यक़ीनन फिरऔन को बरतरी हासिल थी उस मुल्क में और उस ने वहां वालों के कई गिरोह बना दिए थे, उन में से

يَّسْتَضْعِفُ طَآئِفَةً مِّنْهُمْ يُذَبِّحُ اَبْنَآءَهُمْ وَيَسْتَحْىٖ نِسَآءَهُمْ ؕ

एक जमाअत को वो कमज़ोर करना चाहता था के उन के बेटों को ज़बह करता था और उन की औरतों को ज़िन्दा

اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٤﴾ وَ نُرِيْدُ اَنْ نَّمُنَّ

रेहने देता था। यक़ीनन वो फ़साद फैलाने वालों में से था। और हम चाहते थे के हम एहसान करें

عَلَى الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا فِى الْاَرْضِ وَنَجْعَلَهُمْ اَئِمَّةً وَّنَجْعَلَهُمُ

उन पर जिन को उस मुल्क में कमज़ोर बना कर रखा गया था और उन्हें पेशवा बनाएं और हम उन्हें

الْوٰرِثِيْنَ ﴿٥﴾ وَنُمَكِّنَ لَهُمْ فِى الْاَرْضِ وَنُرِىَ فِرْعَوْنَ

वारिस बनाएं। और हम उन्हें उस मुल्क में हुकूमत दें और हम दिखाएं फिरऔन

وَهَامٰنَ وَجُنُوْدَهُمَا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَحْذَرُوْنَ ﴿٦﴾

और हामान और उन के लशकरों को उन की तरफ से वो जिस से वो डरते थे।

وَ اَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اُمِّ مُوْسٰٓى اَنْ اَرْضِعِيْهِ ۚ فَاِذَا خِفْتِ

और हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) की माँ की तरफ वही की के तुम उस को दूध पिलाती रहो। फिर जब तुम उस के

عَلَيْهِ فَاَلْقِيْهِ فِى الْيَمِّ وَلَا تَخَافِىْ وَلَا تَحْزَنِىْ ۚ اِنَّا

बारे में ख़ौफ़ करो तो उसे समन्दर में डाल देना और न ख़ौफ़ करना, न ग़म। यक़ीनन हम

رَآدُّوْهُ اِلَيْكِ وَجَاعِلُوْهُ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝٧ فَالْتَقَطَهٗٓ

उसे आप की तरफ वापस लौटाएंगे और हम उसे पैग़म्बरों में से बना देंगे। फिर उस को आले फिरऔन

اٰلُ فِرْعَوْنَ لِيَكُوْنَ لَهُمْ عَدُوًّا وَّحَزَنًا ؕ اِنَّ فِرْعَوْنَ

ने उचक लिया ताके वो उन का दुशमन और ग़म का बाइस बने। यक़ीनन फिरऔन और

وَ هَامٰنَ وَ جُنُوْدَهُمَا كَانُوْا خٰطِـِٕيْنَ ۝٨ وَ قَالَتِ امْرَاَتُ

हामान और उन का लशकर ग़लती पर थे। और फिरऔन की बीवी

فِرْعَوْنَ قُرَّتُ عَيْنٍ لِّيْ وَلَكَ ؕ لَا تَقْتُلُوْهُ ۖ عَسٰٓى

ने कहा के ये मेरी और तेरी आँखों की ठंडक है। तुम उसे क़त्ल मत करो। हो सकता है

اَنْ يَّنْفَعَنَآ اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝٩ وَاَصْبَحَ

वो हमें नफा दे या हम उसे बेटा बना लें और वो (अन्जाम से) बेखबर थे। और मूसा

فُؤَادُ اُمِّ مُوْسٰى فٰرِغًا ؕ اِنْ كَادَتْ لَتُبْدِيْ بِهٖ

(अलैहिस्सलाम) की माँ का दिल बेक़रार हो गया। क़रीब थी के बेक़रारी ज़ाहिर कर देती

لَوْلَآ اَنْ رَّبَطْنَا عَلٰى قَلْبِهَا لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١٠

अगर हम उस के दिल को (सब्र से) मज़बूत न करते ताके वो वादे के तसदीक़ करने वालियों में से रहे।

وَقَالَتْ لِاُخْتِهٖ قُصِّيْهِ ۫ فَبَصُرَتْ بِهٖ عَنْ جُنُبٍ وَّهُمْ

और मूसा (अलैहिस्सलाम) की माँ ने मूसा (अलैहिस्सलाम) की बेहेन से कहा के तू उस के पीछे पीछे जा। फिर वो दूर से मूसा (अलैहिस्सलाम) को देख

لَا يَشْعُرُوْنَ ۝١١ وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلُ

रही थी इस हाल में के फिरऔनियों को पता नहीं था। और हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) पर दूध पिलाने वालियों को हराम कर दिया

فَقَالَتْ هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰٓى اَهْلِ بَيْتٍ يَّكْفُلُوْنَهٗ لَكُمْ

इस से पहले, तो मूसा (अलैहिस्सलाम) की बेहेन ने कहा क्या मैं तुम्हें पता बतलाऊँ ऐसे घराने का जो उस की किफालत करें तुम्हारे

وَهُمْ لَهٗ نٰصِحُوْنَ ۝١٢ فَرَدَدْنٰهُ اِلٰٓى اُمِّهٖ كَيْ تَقَرَّ

लिए और वो सब उस के खैरख्वाह हों। चुनांचे हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को उस की माँ की तरफ़ वापस लौटा दिया

عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ وَلِتَعْلَمَ اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ

ताके उस की आँखें ठन्डी रहें और ग़मगीन न रहे और ये जान ले के अल्लाह का वादा सच्चा है लेकिन उन में से

وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝١٣ وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَاسْتَوٰٓى ع

अक्सर जानते नहीं। और जब मूसा (अलैहिस्सलाम) अपनी जवानी को पहोंचे और (जिस्म व अक़्ल के ऐतेबार से)

اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ۝١٤

मुकम्मल हो गए तो हम ने उन्हें नुबूव्वत (शरीअत) दी और इल्म दिया। और इसी तरह हम नेकी करने वालों को बदला देते हैं।

وَدَخَلَ الْمَدِيْنَةَ عَلٰى حِيْنِ غَفْلَةٍ مِّنْ اَهْلِهَا فَوَجَدَ

और मूसा (अलैहिस्सलाम) शेहर में वहां वालों की ग़फ़लत के वक़्त में दाख़िल हुए, तो मूसा (अलैहिस्सलाम) ने उस में दो

فِيْهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلٰنِ ۗ هٰذَا مِنْ شِيْعَتِهٖ وَهٰذَا

आदमियों को पाया जो आपस में लड़ रहे थे। ये मूसा (अलैहिस्सलाम) की जमाअत में से था और ये उन के दुशमनों में से

مِنْ عَدُوِّهٖ ۚ فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِىْ مِنْ شِيْعَتِهٖ عَلَى الَّذِىْ

था। तो मूसा (अलैहिस्सलाम) से मदद तलब की उस ने जो आप की जमाअत में से था उस के ख़िलाफ़ जो आप के

مِنْ عَدُوِّهٖ ۙ فَوَكَزَهٗ مُوْسٰى فَقَضٰى عَلَيْهِ ۗ قَالَ هٰذَا

दुशमनों में से था। तो मूसा (अलैहिस्सलाम) ने उस को एक घूंसा मारा तो उस को मार दिया। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ये शैतानी

مِنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِيْنٌ ۝١٥ قَالَ رَبِّ

हरकत से हुवा। यक़ीनन वो खुला गुमराह करने वाला दुशमन है। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने दुआ की के ऐ मेरे रब!

اِنِّىْ ظَلَمْتُ نَفْسِىْ فَاغْفِرْ لِىْ فَغَفَرَ لَهٗ ؕ اِنَّهٗ هُوَ

यक़ीनन मैं ने मेरी जान पर जुल्म किया, इस लिए तू मेरी मग़फिरत कर दे, तो अल्लाह ने उन्हें मुआफ़ कर दिया। यक़ीनन वो

الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝١٦ قَالَ رَبِّ بِمَآ اَنْعَمْتَ عَلَىَّ

बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने दुआ की ऐ मेरे रब! इस वजह से के तू ने मुझ पर इन्आम फरमाया है,

فَلَنْ اَكُوْنَ ظَهِيْرًا لِّلْمُجْرِمِيْنَ ۝١٧ فَاَصْبَحَ فِى الْمَدِيْنَةِ

तो मैं मुजरिमों का मददगार हरगिज़ नहीं बनूंगा। फिर मूसा (अलैहिस्सलाम) ने शेहर में डरते हुए (पकड़े जाने के)

خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ فَاِذَا الَّذِى اسْتَنْصَرَهٗ بِالْاَمْسِ

इन्तिज़ार में सुबह की, तो अचानक वही शख़्स जिस ने आप से कल को मदद तलब की थी वो आप से फिर

يَسْتَصْرِخُهٗ ؕ قَالَ لَهٗ مُوْسٰٓى اِنَّكَ لَغَوِىٌّ مُّبِيْنٌ ۝١٨

मदद का तालिब है। उस से मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया यक़ीनन तू ही खुला गुमराह है।

فَلَمَّآ اَنْ اَرَادَ اَنْ يَّبْطِشَ بِالَّذِىْ هُوَ عَدُوٌّ لَّهُمَا ۙ

फिर जब मूसा (अलैहिस्सलाम) ने इरादा किया के पकड़ें उसे जो उन दोनों का दुशमन है,

قَالَ يٰمُوْسٰٓى اَتُرِيْدُ اَنْ تَقْتُلَنِىْ كَمَا قَتَلْتَ نَفْسًۢا

तो वो बोला ऐ मूसा! क्या तुम चाहते हो के तुम मुझे क़त्ल कर दो जैसा तुम ने कल एक शख़्स को क़त्ल

بِالْاَمْسِ ۛ اِنْ تُرِيْدُ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ جَبَّارًا فِى الْاَرْضِ

कर दिया था। तुम नहीं चाहते मगर ये के दूसरों पर ज़बर्दस्त बन कर इस इलाक़े में रहो

وَمَا تُرِيْدُ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْمُصْلِحِيْنَ ﴿١٩﴾ وَجَآءَ رَجُلٌ

और तुम नहीं चाहते के इस्लाह करने वालों में से बनो। और एक आदमी आया

مِّنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ يَسْعٰى ۙ قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنَّ الْمَلَاَ

शेहर के किनारे से दौड़ता हुवा। केहने लगा ऐ मूसा! यक़ीनन दरबारी आप के मुतअल्लिक़ मशवरा कर रहे

يَاْتَمِرُوْنَ بِكَ لِيَقْتُلُوْكَ فَاخْرُجْ اِنِّىْ لَكَ مِنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿٢٠﴾

हैं के आप को क़त्ल कर दें, इस लिए आप निकल जाइए, यक़ीनन मैं आप के खैरख्वाहों में से हूँ।

فَخَرَجَ مِنْهَا خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ ۙ قَالَ رَبِّ نَجِّنِىْ

फिर मूसा (अलैहिस्सलाम) उस शेहर से निकल गए पकड़े जाने के खौफ से। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने दुआ की ऐ मेरे रब! मुझे

مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢١﴾ ع وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَآءَ مَدْيَنَ قَالَ ع ۵

ज़ालिम क़ौम से बचा ले। और जब मूसा (अलैहिस्सलाम) मदयन की जानिब मुतवज्जेह हुए तो केहने लगे

عَسٰى رَبِّىْٓ اَنْ يَّهْدِيَنِىْ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿٢٢﴾ وَلَمَّا وَرَدَ

उम्मीद है के मेरा रब मुझे सीधे रास्ते की रहनुमाई करेगा। और जब मूसा (अलैहिस्सलाम) मदयन के पानी

مَآءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ اُمَّةً مِّنَ النَّاسِ يَسْقُوْنَ ۖ

पर उतरे तो वहां पर लोगों की एक जमाअत को पाया जो जानवरों को पानी पिला रही थी। और उन के पीछे दो

وَوَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمُ امْرَاَتَيْنِ تَذُوْدٰنِ ۚ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا ۬

औरतों को पाया जो (अपने जानवर पानी से) हटा रही थीं। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने पूछा के तुम दोनों का क्या हाल है?

قَالَتَا لَا نَسْقِىْ حَتّٰى يُصْدِرَ الرِّعَآءُ ۭ وَاَبُوْنَا شَيْخٌ

तो दोनों केहने लगीं के हम पानी नहीं पिलाते यहां तक के चरवाहे पिला कर चले जाएं। और हमारे बाप बहोत

كَبِيْرٌ ﴿٢٣﴾ فَسَقٰى لَهُمَا ثُمَّ تَوَلّٰٓى اِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ

बूढ़े हैं। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने उन के जानवरों को पानी पिला दिया, फिर वो साए की तरफ़ वापस लौटे और दुआ की

اِنِّىْ لِمَآ اَنْزَلْتَ اِلَىَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيْرٌ ﴿٢٤﴾ فَجَآءَتْهُ اِحْدٰىهُمَا

ऐ मेरे रब! यक़ीनन मैं मोहताज हूँ उस खैर का जो तू मेरी तरफ उतारे। फिर उन में से एक मूसा (अलैहिस्सलाम) के

تَمْشِىْ عَلَى اسْتِحْيَآءٍ ۖ قَالَتْ اِنَّ اَبِىْ يَدْعُوْكَ لِيَجْزِيَكَ

पास आई जो शरमाती हुई चल रही थी। केहने लगी मेरे अब्बा आप को बुला रहे हैं ताके आप को उजरत दें इस के

اَجْرَ مَا سَقَيْتَ لَنَا ؕ فَلَمَّا جَآءَهٗ وَقَصَّ عَلَيْهِ

सिले में के आप ने हमारे जानवरों को पानी पिलाया। फिर जब मूसा (अलैहिस्सलाम) शुऐब (अलैहिस्सलाम) के पास पहोंचे और उन के सामने

الْقَصَصَ ۙ قَالَ لَا تَخَفْ ۟ نَجَوْتَ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٥﴾

क़िस्सा बयान किया तो शुऐब (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया आप ख़ौफ़ न कीजिए, आप ने ज़ालिम क़ौम से नजात पा ली।

قَالَتْ اِحْدٰىهُمَا يٰۤاَبَتِ اسْتَاْجِرْهُ ۫ اِنَّ خَيْرَ مَنِ اسْتَاْجَرْتَ

उन में से एक ने कहा ऐ मेरे अब्बा! आप इन्हें नौकरी पर रख लीजिए। यक़ीनन उन में सब से बेहतर जिन्हें आप मज़दूर

الْقَوِيُّ الْاَمِيْنُ ﴿٢٦﴾ قَالَ اِنِّيْۤ اُرِيْدُ اَنْ اُنْكِحَكَ

रखें वो है जो क़ूव्वत वाला भी हो और अमानत वाला भी हो। शुऐब (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया के मैं चाहता हूँ के आप के निकाह

اِحْدَى ابْنَتَيَّ هٰتَيْنِ عَلٰۤى اَنْ تَاْجُرَنِيْ ثَمٰنِيَ حِجَجٍ ۚ

में दूँ मेरी इन दो बेटियों में से एक इस शर्त पर के आप मेरे यहाँ नौकरी करोगे आठ साल।

فَاِنْ اَتْمَمْتَ عَشْرًا فَمِنْ عِنْدِكَ ۚ وَمَاۤ اُرِيْدُ اَنْ اَشُقَّ

फिर अगर आप दस साल पूरे कर दो तो ये आप की तरफ से होगा। और मैं ये नहीं चाहता के आप पर मशक़्क़त

عَلَيْكَ ؕ سَتَجِدُنِيْۤ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٢٧﴾

डालूँ। अनक़रीब आप मुझे सुलहा में से पाएंगे अगर अल्लाह ने चाहा।

قَالَ ذٰلِكَ بَيْنِيْ وَبَيْنَكَ ؕ اَيَّمَا الْاَجَلَيْنِ قَضَيْتُ

मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के ये मेरे और आप के दरमियान मुआहदा है। दोनों मुद्दतों में से जो मैं पूरी करूँ

فَلَا عُدْوَانَ عَلَيَّ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ﴿٢٨﴾

तो मेरे ऊपर कोई ज़्यादती नहीं की जाएगी। और अल्लाह वकील है उन बातों पर जो हम केह रहे हैं।

ع ٣

فَلَمَّا قَضٰى مُوْسَى الْاَجَلَ وَسَارَ بِاَهْلِهٖۤ اٰنَسَ

फिर जब मूसा (अलैहिस्सलाम) ने मुद्दत पूरी कर ली और अपनी बीवी को ले कर चले तो मूसा (अलैहिस्सलाम) ने

مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ نَارًا ۚ قَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْۤا

कोहे तूर की जानिब से आग देखी। अपनी बीवी से फ़रमाया के तुम ठेहरो,

اِنِّيْۤ اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّيْۤ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ جَذْوَةٍ

यक़ीनन मैं ने आग देखी है, शायद मैं आग की कोई खबर या आग का एक अंगारा

مِّنَ النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ﴿٢٩﴾ فَلَمَّاۤ اَتٰىهَا نُوْدِيَ مِنْ

ले आऊँ ताके तुम तापो। फिर जब मूसा (अलैहिस्सलाम) आग के पास पहोंचे तो बरकत वाले मैदान में

شَاطِئِ الْوَادِ الْاَيْمَنِ فِي الْبُقْعَةِ الْمُبٰرَكَةِ वादी के दाहने किनारे से एक दरख्त से आवाज़
مِنَ الشَّجَرَةِ اَنْ يّٰمُوْسٰٓى اِنِّيْٓ اَنَا اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٣٠ दी गई ऐ मूसा! यक़ीनन मैं ही अल्लाह हूँ, तमाम जहानों का रब हूँ।
وَاَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰى और ये के आप अपना असा डाल दीजिए। फिर जब मूसा (अलैहिस्सलाम) ने असा को देखा के हरकत कर रहा है गोया के वो सांप
مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ؕ يٰمُوْسٰٓى اَقْبِلْ وَلَا تَخَفْ है तो आप पुश्त फेर कर भागे और पीछे मुड़ कर नहीं देखा।(अल्लाह ने फ़रमाया) ऐ मूसा! आप आगे आइए और ख़ौफ़ न
اِنَّكَ مِنَ الْاٰمِنِيْنَ ۝٣١ اُسْلُكْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ कीजिए। यक़ीनन आप अमन पाने वालों में से हैं। आप अपना हाथ अपने गिरेबान में दाख़िल कीजिए, वो रोशन हो कर
بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ ز وَّاضْمُمْ اِلَيْكَ جَنَاحَكَ निकलेगा बग़ैर किसी बुराई के। और अपनी तरफ अपना बाज़ू खौफ की वजह से
مِنَ الرَّهْبِ فَذٰنِكَ بُرْهَانٰنِ مِنْ رَّبِّكَ اِلٰى فِرْعَوْنَ मिला लीजिए, ये दोनों दलीलें हैं, इन्हें आप के रब की तरफ़ से फ़िरऔन और उस के दरबारियों के पास
وَ مَلَا۠ئِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ۝٣٢ قَالَ رَبِّ ले कर जाइए। इस लिए के वो नाफरमान क़ौम है। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अर्ज़ किया ऐ मेरे रब!
اِنِّيْ قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ۝٣٣ وَاَخِيْ यक़ीनन मैं ने उन में से एक शख्स को क़त्ल किया है, तो मैं डरता हूँ के वो मुझे क़त्ल कर देंगे। और मेरा
هٰرُوْنُ هُوَ اَفْصَحُ مِنِّيْ لِسَانًا فَاَرْسِلْهُ مَعِيَ رِدْاً भाई हारून वो मुझ से ज़्यादा फसीह ज़बान वाला है तो आप उन को मेरे साथ मददगार बना कर भेज दीजिए
يُّصَدِّقُنِيْٓ ز اِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ ۝٣٤ قَالَ سَنَشُدُّ ताके वो मेरी तसदीक़ करे। इस लिए के मैं डरता हूँ के वो मुझे झुठलाएंगे। अल्लाह ने फरमाया के
عَضُدَكَ بِاَخِيْكَ وَ نَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطٰنًا अनक़रीब हम आप का बाज़ू मज़बूत करेंगे आप के भाई के ज़रिए और तुम दोनों को ग़लबा देंगे के वो
فَلَا يَصِلُوْنَ اِلَيْكُمَا ۚ بِاٰيٰتِنَآ ۚ اَنْتُمَا وَمَنِ اتَّبَعَكُمَا तुम तक नहीं पहोंच सकेंगे। हमारे मोअजिज़ात ले कर जाओ। तुम दोनों और जिन्हों ने तुम्हारा इत्तिबा किया

الْغٰلِبُوْنَ ﴿٣٥﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَا بَيِّنٰتٍ

तुम ही ग़ालिब रहोगे। फिर जब मूसा (अलैहिस्सलाम) उन के पास आए हमारे रोशन मोअजिज़ात ले कर,

قَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّفْتَرًى وَّمَا سَمِعْنَا بِهٰذَا

उन्हों ने कहा ये तो महज़ एक घड़ा हुवा जादू है और हम ने इस को

فِيْٓ اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِيْنَ ﴿٣٦﴾ وَقَالَ مُوْسٰى رَبِّيْٓ اَعْلَمُ

अपने पेहले बाप दादा में नहीं सुना। और मूसा (अलैहिस्सलाम) ने कहा के मेरा रब खूब जानता है

بِمَنْ جَآءَ بِالْهُدٰى مِنْ عِنْدِهٖ وَمَنْ تَكُوْنُ لَهٗ

उस को जो हिदायत ले कर आया है उस के पास से और उसे भी जिस के लिए

عَاقِبَةُ الدَّارِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٣٧﴾ وَقَالَ فِرْعَوْنُ

आखिरत का घर है। यक़ीनन ज़ालिम लोग फलाह नहीं पाएंगे। और फिरऔन ने कहा

يٰٓاَيُّهَا الْمَلَاُ مَا عَلِمْتُ لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرِيْ ۚ فَاَوْقِدْ

ऐ दरबारियो! मैं तुम्हारे लिए मेरे अलावा कोई माबूद नहीं जानता। ऐ हामान!

لِيْ يٰهَامٰنُ عَلَى الطِّيْنِ فَاجْعَلْ لِّيْ صَرْحًا

तू मेरे लिए मिट्टी पर आग जला, फिर तू मेरे लिए एक ऊँची इमारत तय्यार कर

لَّعَلِّيْٓ اَطَّلِعُ اِلٰٓى اِلٰهِ مُوْسٰى ۙ وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ

ताके मैं मूसा के माबूद को झांक कर देखूँ। और मैं यक़ीनन उसे झूठा

مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٣٨﴾ وَاسْتَكْبَرَ هُوَ وَجُنُوْدُهٗ فِي الْاَرْضِ

समझता हूँ। और फ़िरऔन और उस के लशकर ने उस मुल्क में नाहक़ बड़ा

بِغَيْرِ الْحَقِّ وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اِلَيْنَا لَا يُرْجَعُوْنَ ﴿٣٩﴾

बनना चाहा और समझा के वो हमारे पास वापस लाए नहीं जाएंगे।

فَاَخَذْنٰهُ وَجُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ

फिर हम ने उसे और उन के लशकरों को पकड़ लिया, फिर हम ने उन्हें समन्दर में फैंक दिया। फिर आप देखिए के

كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٠﴾ وَجَعَلْنٰهُمْ اَئِمَّةً يَّدْعُوْنَ

ज़ालिमों का अन्जाम कैसा हुवा? और हम ने उन्हें सरदार बनाया जो आग की तरफ़

اِلَى النَّارِ ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿٤١﴾ وَاَتْبَعْنٰهُمْ

बुलाते थे। और क़यामत के दिन उन की नुसरत नहीं की जाएगी। और हम ने

فِىْ هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ هُمْ
इस दुन्या में उन के पीछे लानत लगा दी। और क़यामत के दिन वो

مِّنَ الْمَقْبُوْحِيْنَ ﴿٤٢﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ مِنْ بَعْدِ ع
बुरों में से होंगे। यक़ीनन हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को पेहली क़ौमों को हलाक

مَآ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ الْاُوْلٰى بَصَآئِرَ لِلنَّاسِ وَهُدًى
करने के बाद किताब दी, इन्सानों के लिए बसीरतों के तौर पर और हिदायत

وَّرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٣﴾ وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ
और रहमत के तौर पर ताके वो नसीहत हासिल करें। और आप मग़रिबी किनारे में

الْغَرْبِىِّ اِذْ قَضَيْنَآ اِلٰى مُوْسَى الْاَمْرَ وَمَا كُنْتَ
नहीं थे जब हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) की तरफ अम्रे (रिसालत) भेजा और आप वहाँ देखने वालों

مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٤٤﴾ وَلٰكِنَّآ اَنْشَاْنَا قُرُوْنًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ
में नहीं थे। लेकिन हम ने पैदा किया क़ौमों को फिर उन की उमरें तवील

الْعُمُرُ ۚ وَمَا كُنْتَ ثَاوِيًا فِىْٓ اَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُوْا
हो गईं। और आप ठेहरे हुए नहीं थे मदयन वालों में के उन पर

عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۙ وَلٰكِنَّا كُنَّا مُرْسِلِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَمَا كُنْتَ
हमारी आयतें तिलावत करते, लेकिन हम ही रसूल भेजने वाले हैं। और आप मौजूद नहीं थे

بِجَانِبِ الطُّوْرِ اِذْ نَادَيْنَا وَلٰكِنْ رَّحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ
कोहे तूर के किनारे पर जब हम ने पुकारा, लेकिन ये आप के रब की तरफ से रहमत है

لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اَتٰهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ
ताके आप डराएं ऐसी क़ौम को जिन के पास कोई डराने वाला आप से पेहले नहीं आया

لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَلَوْلَآ اَنْ تُصِيْبَهُمْ مُّصِيْبَةٌ
ताके वो नसीहत हासिल करें। और अगर ये बात न होती के उन्हें मुसीबत पहोंचे

بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ فَيَقُوْلُوْا رَبَّنَا لَوْلَآ اَرْسَلْتَ
उन आमाल की वजह से जो उन के हाथों ने आगे भेजे, फिर वो कहें ऐ हमारे रब! तू ने हमारी तरफ

اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾
रसूल क्यूं नहीं भेजा के हम तेरी आयतों का इत्तिबा करते और हम ईमान लाने वालों में से हो जाते।

فَلَمَّا جَآءَهُمُ الۡحَقُّ مِنۡ عِنۡدِنَا قَالُوۡا لَوۡلَاۤ اُوۡتِیَ
फिर जब उन के पास हमारी तरफ से हक़ आया तो उन्हों ने कहा के इस नबी को क्यूं नहीं दिया गया उस जैसा

مِثۡلَ مَاۤ اُوۡتِیَ مُوۡسٰی ؕ اَوَلَمۡ یَکۡفُرُوۡا بِمَاۤ اُوۡتِیَ مُوۡسٰی
मोअजिज़ा जो मूसा (अलैहिस्सलाम) को दिया गया? क्या उन्हों ने कुफ्र नहीं किया उस मोअजिज़े के साथ जो मूसा (अलैहिस्सलाम) को दिया गया

مِنۡ قَبۡلُ ۚ قَالُوۡا سِحۡرٰنِ تَظٰہَرَا ٝ وَ قَالُوۡۤا اِنَّا بِکُلٍّ
इस से पेहले? उन्हों ने कहा के दो जादूगर हैं जिन्हों ने एक दूसरे की मदद की है। और उन्हों ने कहा के हम किसी मोअजिज़े

کٰفِرُوۡنَ ﴿٤٨﴾ قُلۡ فَاۡتُوۡا بِکِتٰبٍ مِّنۡ عِنۡدِ اللّٰہِ ہُوَ
को नहीं मानते। आप फरमा दीजिए के तुम अल्लाह की तरफ से किताब लाओ जो

اَہۡدٰی مِنۡہُمَاۤ اَتَّبِعۡہُ اِنۡ کُنۡتُمۡ صٰدِقِیۡنَ ﴿٤٩﴾ فَاِنۡ
उन दोनों से ज़्यादा रास्ता बतलाने वाली हो के मैं उस के पीछे चलूँ अगर तुम सच्चे हो। फिर अगर

لَّمۡ یَسۡتَجِیۡبُوۡا لَکَ فَاعۡلَمۡ اَنَّمَا یَتَّبِعُوۡنَ اَہۡوَآءَہُمۡ ؕ
वो आप की बात का जवाब न दें तो जान लो के यक़ीनन वो अपनी ख्वाहिशात के पीछे चल रहे हैं।

وَمَنۡ اَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ ہَوٰىہُ بِغَیۡرِ ہُدًی مِّنَ اللّٰہِ ؕ
और उस से ज़्यादा गुमराह कौन होगा जो अपनी ख्वाहिश के पीछे चले अल्लाह की तरफ से हिदायत के बग़ैर।

ع ٥/٨ اِنَّ اللّٰہَ لَا یَہۡدِی الۡقَوۡمَ الظّٰلِمِیۡنَ ﴿٥٠﴾ وَلَقَدۡ وَصَّلۡنَا
बेशक अल्लाह ज़ालिम क़ौम को हिदायत नहीं देते। यक़ीनन हम ने उन के लिए

لَہُمُ الۡقَوۡلَ لَعَلَّہُمۡ یَتَذَکَّرُوۡنَ ﴿٥١﴾ اَلَّذِیۡنَ اٰتَیۡنٰہُمُ
ये कलाम (कुरआन) लगातार भेजा ताके वो नसीहत हासिल करें। वो जिन को हम ने इस से पेहले

النصف الۡکِتٰبَ مِنۡ قَبۡلِہٖ ہُمۡ بِہٖ یُؤۡمِنُوۡنَ ﴿٥٢﴾ وَاِذَا یُتۡلٰی
किताब दी वो उस पर ईमान लाते हैं। और जब उन पर उसे तिलावत

عَلَیۡہِمۡ قَالُوۡۤا اٰمَنَّا بِہٖۤ اِنَّہُ الۡحَقُّ مِنۡ رَّبِّنَاۤ اِنَّا کُنَّا
किया जाता है, तो केहते हैं के हम इस पर ईमान लाए, यक़ीनन ये हक़ है हमारे रब की तरफ से, यक़ीनन हम

مِنۡ قَبۡلِہٖ مُسۡلِمِیۡنَ ﴿٥٣﴾ اُولٰٓئِکَ یُؤۡتَوۡنَ اَجۡرَہُمۡ مَّرَّتَیۡنِ
इस से पेहले भी मुसलमान थे। यही हैं जिन्हें उन का अज्र दुगना मिलेगा इस वजह से के

بِمَا صَبَرُوۡا وَیَدۡرَءُوۡنَ بِالۡحَسَنَۃِ السَّیِّئَۃَ وَمِمَّا
उन्हों ने सब्र किया और वो भलाई के ज़रिए बुराई को दफा करते हैं और उन चीज़ों में से जो

رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿٥٤﴾ وَاِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ اَعْرَضُوْا

हम ने उन्हें दीं खर्च करते हैं। और जब वो लग़्व बात सुनते हैं तो उस से ऐराज़

عَنْهُ وَقَالُوْا لَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ز سَلٰمٌ

करते हैं और केहते हैं के हमारे लिए हमारे आमाल हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे आमाल हैं। अस्सलामु

عَلَيْكُمْ ز لَا نَبْتَغِي الْجٰهِلِيْنَ ﴿٥٥﴾ اِنَّكَ لَا تَهْدِيْ مَنْ

अलैकुम। जाहिल हमें नहीं चाहिए। बिल्कुल आप हिदायत नहीं दे सकते उस को

اَحْبَبْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ج وَهُوَ اَعْلَمُ

जिसे आप चाहें लेकिन अल्लाह हिदायत देता है जिसे वो चाहता है। और अल्लाह हिदायत पाने वालों

بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿٥٦﴾ وَقَالُوْٓا اِنْ نَّتَّبِعِ الْهُدٰى مَعَكَ

को ख़ूब जानता है। और उन्हों ने कहा के अगर हम इस हिदायत के पीछे चलेंगे तेरे साथ

نُتَخَطَّفْ مِنْ اَرْضِنَا ط اَوَلَمْ نُمَكِّنْ لَّهُمْ حَرَمًا اٰمِنًا

तो हमें हमारे मुल्क से उचक लिया जाएगा। क्या हम ने उन को जगह नहीं दी अमन वाले हरम में

يُّجْبٰٓى اِلَيْهِ ثَمَرٰتُ كُلِّ شَيْءٍ رِّزْقًا مِّنْ لَّدُنَّا

जिस की तरफ़ हर क़िस्म के फल खींच कर लाए जाते हैं हमारी तरफ से रोज़ी के तौर पर?

وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَكَمْ اَهْلَكْنَا

लेकिन उन में से अक्सर जानते नहीं। और कितनी बस्तियाँ हम हलाक कर

مِنْ قَرْيَةٍۭ بَطِرَتْ مَعِيْشَتَهَا ج فَتِلْكَ مَسٰكِنُهُمْ لَمْ تُسْكَنْ

चुके हैं जो अपनी मईशत पर इतराती थी। तो ये उन के मकानात हैं जिन में रहा नहीं गया

مِّنْۢ بَعْدِهِمْ اِلَّا قَلِيْلًا ط وَكُنَّا نَحْنُ الْوٰرِثِيْنَ ﴿٥٨﴾

उन के बाद मगर बहोत थोड़ा। और हम ही वारिस हुए।

وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى حَتّٰى يَبْعَثَ فِيْٓ اُمِّهَا

और आप का रब बस्तियों को हलाक नहीं कर देता जब तक के उन में से बड़ी बस्ती में रसूल

رَسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ج وَمَا كُنَّا مُهْلِكِي الْقُرٰٓى

नहीं भेजता जो उन पर हमारी आयतें तिलावत करे। और हम बस्तियों को हलाक नहीं करते

اِلَّا وَاَهْلُهَا ظٰلِمُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ

मगर जब ही के वहाँ वाले ज़ालिम होते हैं। और जो कुछ भी तुम्हें दिया गया है

فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَزِيْنَتُهَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ

वो दुन्यवी ज़िन्दगी का थोड़ा सा नफा और उस की ज़ीनत है। और जो अल्लाह के पास है वो ज़्यादा बेहतर

خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝٦٠ اَفَمَنْ وَّعَدْنٰهُ ع ٦

है और ज़्यादा बाक़ी रेहने वाला है। क्या फिर तुम अक़्ल नहीं रखते? क्या फिर वो शख़्स जिस से हम ने

وَعْدًا حَسَنًا فَهُوَ لَاقِيْهِ كَمَنْ مَّتَّعْنٰهُ مَتَاعَ

अच्छा वादा कर रखा है फिर वो उसे पाएगा, उस शख़्स की तरह हो सकता है के जिस को हम ने दुन्यवी

الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ۝٦١

ज़िन्दगी में मुतमत्तेअ किया, फिर वो क़यामत के दिन (पकड़ कर) हाज़िर किए जाने वालों में से होगा?

وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِىَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ

और जिस दिन अल्लाह उन्हें पुकार कर कहेगा कहाँ हैं मेरे वो शुरका जिन का तुम दावा किया

تَزْعُمُوْنَ ۝٦٢ قَالَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا

करते थे? वो लोग कहेंगे जिन पर अज़ाब का कलिमा साबित हो गया ऐ हमारे रब!

هٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَغْوَيْنَا ۚ اَغْوَيْنٰهُمْ كَمَا غَوَيْنَا ۚ تَبَرَّاْنَآ

ये हैं वो जिन को हम ने बेहकाया। जिस तरह हम बेहके हुए थे हम ने उन्हें बेहकाया। हम तेरी तरफ बराअत

اِلَيْكَ ۖ مَا كَانُوْٓا اِيَّانَا يَعْبُدُوْنَ ۝٦٣ وَقِيْلَ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ

करते हैं के ये हमारी इबादत नहीं करते थे। और कहा जाएगा के तुम पुकारो तुम्हारे शुरका को,

فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَرَاَوُا الْعَذَابَ ۚ

फिर वो उन को पुकारेंगे, तो वो उन को जवाब नहीं देंगे, इसी दौरान वो अज़ाब देख लेंगे।

لَوْ اَنَّهُمْ كَانُوْا يَهْتَدُوْنَ ۝٦٤ وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ

काश के वो हिदायत पाते। और जिस दिन वो उन्हें पुकारेगा फिर कहेगा

مَاذَآ اَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِيْنَ ۝٦٥ فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ الْاَنْۢبَآءُ

के तुम ने रसूलों को क्या जवाब दिया था? फिर उन पर खबरें उस दिन बन्द हो

يَوْمَئِذٍ فَهُمْ لَا يَتَسَآءَلُوْنَ ۝٦٦ فَاَمَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ

जाएंगी, फिर वो एक दूसरे से भी सवाल नहीं करेंगे। हाँ, जिस ने तौबा की और ईमान लाया

وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ مِنَ الْمُفْلِحِيْنَ ۝٦٧

और नेक अमल किए, तो उम्मीद है के वो फलाह पाने वालों में से हो।

وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ وَيَخْتَارُ ؕ مَا كَانَ لَهُمُ

और तेरा रब पैदा करे जिसे चाहे और चुने जिसे चाहे। उन लोगों के पास

الْخِيَرَةُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٨﴾

इन्तिखाब का इखतियार नहीं। अल्लाह पाक है और बरतर है उन चीज़ों में से जो ये शरीक ठेहराते हैं।

وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٦٩﴾

और तेरा रब खूब जानता है उस को जो उन के सीने छुपाते और ज़ाहिर करते हैं।

وَهُوَ اللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ لَهُ الْحَمْدُ فِى الْاُوْلٰى

और वही अल्लाह है, उस के सिवा कोई माबूद नहीं। उसी के लिए तमाम तारीफें हैं दुन्या में

وَالْاٰخِرَةِ ۫ وَلَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٧٠﴾ قُلْ

और आखिरत में। और उसी के लिए हुकूमत है और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे। आप पूछिए

اَرَءَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ الَّيْلَ سَرْمَدًا

तुम्हारी क्या राए है अगर अल्लाह तुम पर रात हमेशा रखे क़यामत

اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِضِيَآءٍ ؕ

के दिन तक, तो कौन माबूद है अल्लाह के अलावा जो तुम्हारे पास रोशनी लाए?

اَفَلَا تَسْمَعُوْنَ ﴿٧١﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ

क्या फिर तुम सुनते नहीं हो? आप पूछिए तुम्हारी क्या राए है अगर अल्लाह तुम पर दिन हमेशा

النَّهَارَ سَرْمَدًا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ

रखे क़यामत के दिन तक, तो कौन माबूद है अल्लाह के अलावा

يَاْتِيْكُمْ بِلَيْلٍ تَسْكُنُوْنَ فِيْهِ ؕ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٧٢﴾

जो तुम्हारे पास रात को लाए जिस में तुम सुकून हासिल करो? क्या फिर तुम बसीरत नहीं रखते?

وَمِنْ رَّحْمَتِهٖ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوْا

और अपनी रहमत से अल्लाह ने तुम्हारे लिए रात और दिन बनाए ताके तुम उस में सुकून

فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٣﴾

हासिल करो और ताके तुम अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करो और ताके तुम शुक्र अदा करो।

وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِىَ الَّذِيْنَ

और जिस दिन अल्लाह उन को पुकार कर कहेगा, कहाँ हैं मेरे शुरका जिन का तुम

كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿٦٣﴾ وَنَزَعْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا

दावा किया करते थे? और हम हर उम्मत में से एक गवाह को निकालेंगे,

فَقُلْنَا هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوْٓا اَنَّ الْحَقَّ لِلّٰهِ

फिर हम कहेंगे के तुम्हारी दलील तुम लाओ, फिर वो जान लेंगे के हक़ अल्लाह ही के लिए है

وَ ضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٦٤﴾ ع اِنَّ قَارُوْنَ

और खो जाएंगे उन से वो जो वो झूठ घड़ा करते थे। यक़ीनन क़ारून

كَانَ مِنْ قَوْمِ مُوْسٰى فَبَغٰى عَلَيْهِمْ ۠ وَاٰتَيْنٰهُ

मूसा (अलैहिस्सलाम) की क़ौम में से था, फिर उन पर बड़ाई मारने लगा। और हम ने उसे

مِنَ الْكُنُوْزِ مَآ اِنَّ مَفَاتِحَهٗ لَتَنُوْٓاُ بِالْعُصْبَةِ

खज़ानों में से इतना दिया था के उस की कुन्जियाँ ताक़तवर जमाअत को

اُولِى الْقُوَّةِ ۗ اِذْ قَالَ لَهٗ قَوْمُهٗ لَا تَفْرَحْ اِنَّ اللّٰهَ

थका देती थी। जब के उस से उस की क़ौम ने कहा तू मत इतरा, यक़ीनन अल्लाह

لَا يُحِبُّ الْفَرِحِيْنَ ﴿٧٦﴾ وَابْتَغِ فِيْمَآ اٰتٰىكَ اللّٰهُ

इतराने वालों से महब्बत नहीं करता। और तू उस माल में जो अल्लाह ने तुझे दिया

الدَّارَ الْاٰخِرَةَ وَلَا تَنْسَ نَصِيْبَكَ مِنَ الدُّنْيَا

दारे आखिरत को तलाश कर और तू दुन्या में से अपना हिस्सा (आखिरत के लिए लेना) मत भूल

وَاَحْسِنْ كَمَآ اَحْسَنَ اللّٰهُ اِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ الْفَسَادَ

और तू एहसान कर जैसा के अल्लाह ने तेरी तरफ एहसान किया और तू ज़मीन में फसाद

فِى الْاَرْضِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٧٧﴾ قَالَ

मत फैला। यक़ीनन अल्लाह फसाद फैलाने वालों से महब्बत नहीं करते। क़ारून बोला

اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰى عِلْمٍ عِنْدِىْ ؕ اَوَلَمْ يَعْلَمْ

के मुझे ये माल मिला है उस इल्म की वजह से जो मेरे पास है। क्या वो ये जानता नहीं के

اَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَهْلَكَ مِنْ قَبْلِهٖ مِنَ الْقُرُوْنِ مَنْ هُوَ

अल्लाह ने उस से पेहले क़ौमों को हलाक किया है जो

اَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَّ اَكْثَرُ جَمْعًا ؕ وَلَا يُسْـَٔلُ

उस से ज़्यादा कूव्वत वाली और उस से ज़्यादा माल जमा करने वाली थीं? और गुनाहों के मुतअल्लिक़

عَنْ ذُنُوْبِهِمُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٧٨﴾ فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ

मुजरिमों से सवाल नहीं किया जाएगा (आमालनामे में मौजूद ही होंगे)। फिर क़ारून अपनी क़ौम के सामने

فِيْ زِيْنَتِهٖ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا

अपनी ज़ीनत में निकला। तो केहने लगे जो दुन्यवी ज़िन्दगी चाहते थे

يٰلَيْتَ لَنَا مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ قَارُوْنُ ۙ اِنَّهٗ لَذُوْ حَظٍّ

के काश के हमें मिलता जैसा क़ारून को दिया गया है। यक़ीनन क़ारून बड़ी क़िस्मत

عَظِيْمٍ ﴿٧٩﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَيْلَكُمْ

वाला है। और उन लोगों ने कहा जिन को इल्म दिया गया के तुम्हारे लिए हलाकत हो!

ثَوَابُ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّمَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۚ

अल्लाह का सवाब बेहतर है उस के लिए जो ईमान लाया और नेक अमल किए।

وَلَا يُلَقّٰىهَآ اِلَّا الصّٰبِرُوْنَ ﴿٨٠﴾ فَخَسَفْنَا بِهٖ وَبِدَارِهِ

और उसे नहीं पाएंगे मगर सब्र करने वाले ही। फिर हम ने क़ारून और उस का घर ज़मीन में

الْاَرْضَ ۫ فَمَا كَانَ لَهٗ مِنْ فِئَةٍ يَّنْصُرُوْنَهٗ

धंसा दिया। फिर उस के लिए कोई जमाअत नहीं थी जो उस की नुसरत करती

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۗ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُنْتَصِرِيْنَ ﴿٨١﴾

अल्लाह के सिवा। और ख़ुद भी वो अपनी मदद न कर सका।

وَاَصْبَحَ الَّذِيْنَ تَمَنَّوْا مَكَانَهٗ بِالْاَمْسِ يَقُوْلُوْنَ

और वो लोग जो कल को उस की जगह पर होने की तमन्ना करते थे वो केहने लगे

وَيْكَاَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ

के तेरे लिए हलाकत हो! यक़ीनन अल्लाह रोज़ी कुशादा करता है जिस के लिए चाहता है

مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ ۚ لَوْلَآ اَنْ مَّنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ

अपने बन्दों में से और तंग करता है जिस के लिए चाहता है। अगर अल्लाह हम पर एहसान न करता तो हमें भी ज़मीन

بِنَا ؕ وَيْكَاَنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٢﴾ تِلْكَ الدَّارُ ع

में धंसा देता। तेरे लिए हलाकत हो, यक़ीनन काफिर लोग फलाह नहीं पाएंगे। ये दारे आखिरत

الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِيْنَ لَا يُرِيْدُوْنَ عُلُوًّا فِي

हम उसे बनाते हैं उन लोगों के लिए जो ज़मीन में बरतरी

الْاَرْضِ وَلَا فَسَادًا ؕ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٨٣﴾
और फ़साद नहीं चाहते। और अच्छा अन्जाम मुत्तक़ियों के लिए है।

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَمَنْ جَآءَ
जो भलाई ले कर आएगा तो उस को उस से बेहतर बदला मिलेगा। और जो बुराई ले कर

بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ
आएगा तो गुनाह करने वालों को सिर्फ उन के

اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٨٤﴾ اِنَّ الَّذِيْ فَرَضَ
आमाल ही की सज़ा मिलेगी। यक़ीनन वो अल्लाह जिस ने

عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لَرَآدُّكَ اِلٰى مَعَادٍ ؕ قُلْ رَّبِّيْٓ
कुरआन आप पर फर्ज़ किया, वो ज़रूर आप को मआद की तरफ लौटाने वाला है। आप फरमा दीजिए मेरा रब

اَعْلَمُ مَنْ جَآءَ بِالْهُدٰى وَمَنْ هُوَ فِيْ ضَلٰلٍ
खूब जानता है के कौन हिदायत ले कर आया और कौन खुली गुमराही

مُّبِيْنٍ ﴿٨٥﴾ وَمَا كُنْتَ تَرْجُوْٓا اَنْ يُّلْقٰٓى اِلَيْكَ
में है? और आप को तवक्कुअ नहीं थी के आप की तरफ किताब उतारी

الْكِتٰبُ اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ ظَهِيْرًا
जाएगी मगर तेरे रब की रहमत की वजह से (नाज़िल हुई), इस लिए आप काफिरों के

لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٨٦﴾ وَلَا يَصُدُّنَّكَ عَنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ بَعْدَ
मददगार न बनें। और आप को अल्लाह की आयतों से ये न रोकें इस के बाद

اِذْ اُنْزِلَتْ اِلَيْكَ وَادْعُ اِلٰى رَبِّكَ وَلَا تَكُوْنَنَّ
के वो आप की तरफ उतारी गईं और आप अपने रब की तरफ दावत दीजिए और मुशरिकीन

مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٨٧﴾ وَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۘ وقف لازم
में से न हों। और अल्लाह के साथ किसी दूसरे माबूद को न पुकारिए।

لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۗ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ اِلَّا وَجْهَهٗ ؕ
कोई माबूद नहीं मगर वही। सिवाए उस की ज़ात के हर चीज़ हलाक होने वाली है।

لَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٨٨﴾ الربع
उसी के लिए हुकूमत है और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे।

اٰیَاتُهَا ٦٩ (٢٩) سُوْرَةُ الْعَنْكَبُوْتِ مَكِّيَّةٌ (٨٥) رُكُوْعَاتُهَا ٧

उस में ६९ आयतें हैं सूरह अन्कबूत मक्का में नाज़िल हुई और ७ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الٓمّٓ ۝١ اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ يُّتْرَكُوْٓا اَنْ يَّقُوْلُوْٓا

अलिफ लाम मीम। क्या इन्सानों ने ये समझ रखा है के उन्हें छोड़ दिया जाएगा इतना केह देने पर के

اٰمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُوْنَ ۝٢ وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِيْنَ

"اٰمَنَّا" और उन को आज़माया नहीं जाएगा? यक़ीनन हम ने आज़माया था उन लोगों को जो

مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ

उन से पेहले थे, फिर अल्लाह ज़रूर मालूम कर के रहेगा उन लोगों को जो सच्चे हैं और झूठों को ज़रूर

الْكٰذِبِيْنَ ۝٣ اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ

मालूम करेगा। क्या उन लोगों ने जो बुरे अमल करते हैं ये समझ रखा है के वो हम से भाग कर आगे

اَنْ يَّسْبِقُوْنَا ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ۝٤ مَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ

निकल सकते हैं? बुरा है जो वो फैसला कर रहे हैं। जो अल्लाह से मिलने की उम्मीद रखता

اللّٰهِ فَاِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ لَاٰتٍ ؕ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝٥

है तो यक़ीनन अल्लाह का मुक़र्रर किया हुवा वक़्त ज़रूर आने वाला है। और वो सुनने वाला, इल्म वाला है।

وَمَنْ جَاهَدَ فَاِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ

और जो मुजाहदा करता है तो सिर्फ अपनी ही ज़ात के लिए मुजाहदा करता है। यक़ीनन अल्लाह तमाम

عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ۝٦ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

जहान वालों से बेनियाज़ है। और जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे

لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَحْسَنَ الَّذِيْ

तो हम उन से उन की बुराइयाँ दूर कर देंगे और हम उन्हें बदला देंगे उन अच्छे कामों का जो

كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝٧ وَ وَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ

वो करते थे। और हम ने इन्सान को उस के वालिदैन के साथ भलाई का हुक्म

حُسْنًا ؕ وَاِنْ جَاهَدٰكَ لِتُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ

दिया। और अगर वो तुझे मजबूर करें ताके तू मेरे साथ शरीक ठेहराए ऐसी चीज़ को जिस की तेरे पास

بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ؕ اِلَیَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ

कोई दलील नहीं तो उन का केहना मत मान। मेरी ही तरफ तुम्हें वापस आना है, फिर मैं तुम्हें खबर दूँगा

بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٨ وَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

उन कामों की जो तुम करते थे। और जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे

لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِی الصّٰلِحِیْنَ ۝٩ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ یَّقُوْلُ

हम उन्हें ज़रूर नेक लोगों में दाखिल करेंगे। और लोगों में से कुछ वो हैं जो केहते हैं के

اٰمَنَّا بِاللّٰهِ فَاِذَاۤ اُوْذِیَ فِی اللّٰهِ جَعَلَ فِتْنَةَ النَّاسِ

"اٰمَنَّا بِاللّٰهِ"। फिर जब उसे अल्लाह की वजह से ईज़ा दी जाती है तो इन्सानों की ईज़ारसानी को अल्लाह के अज़ाब

كَعَذَابِ اللّٰهِ ؕ وَلَىِٕنْ جَآءَ نَصْرٌ مِّنْ رَّبِّكَ لَیَقُوْلُنَّ

के मानिन्द क़रार देता है। और अगर तेरे रब की तरफ से नुसरत आए तो वो ज़रूर कहेगा के

اِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ ؕ اَوَلَیْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِمَا فِیْ صُدُوْرِ

यक़ीनन हम तुम्हारे साथ थे। क्या अल्लाह बखूबी नहीं जानता जो जहान वालों के सीनों में (छुपा हुवा)

الْعٰلَمِیْنَ ۝١٠ وَلَیَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَلَیَعْلَمَنَّ

है? और अल्लाह ज़रूर मालूम करेगा उन लोगों को जो ईमान लाए और अल्लाह मुनाफिक़ीन को ज़रूर मालूम

الْمُنٰفِقِیْنَ ۝١١ وَ قَالَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوا

करेगा। और काफिरों ने ईमान वालों से कहा के तुम हमारे

اتَّبِعُوْا سَبِیْلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطٰیٰكُمْ ؕ وَمَا هُمْ بِحٰمِلِیْنَ

रास्ते पर चलने लग जाओ और हम तुम्हारे गुनाह उठा लेते हैं। हालांके वो उन के गुनाहों में से

مِنْ خَطٰیٰهُمْ مِّنْ شَیْءٍ ؕ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝١٢ وَلَیَحْمِلُنَّ

कुछ भी उठाने वाले नहीं हैं। यक़ीनन वो झूठे हैं। और वो ज़रूर अपने बोझ

اَثْقَالَهُمْ وَاَثْقَالًا مَّعَ اَثْقَالِهِمْ ۫ وَلَیُسْـَٔلُنَّ یَوْمَ

उठाएंगे और अपने बोझ के साथ दूसरों के बोझ भी उठाएंगे। और उन से क़यामत के दिन ज़रूर सवाल

الْقِیٰمَةِ عَمَّا كَانُوْا یَفْتَرُوْنَ ۝١٣ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا ع ١٣ ١٢

किया जाएगा उस के मुतअल्लिक़ जो वो झूठ घड़ा करते थे। यक़ीनन हम ने नूह (अलैहिस्सलाम) को रसूल बना कर भेजा

اِلٰی قَوْمِهٖ فَلَبِثَ فِیْهِمْ اَلْفَ سَنَةٍ اِلَّا خَمْسِیْنَ عَامًا ؕ

उन की क़ौम की तरफ, फिर वो उन में ठेहरे एक हज़ार साल मगर पचास साल (यानी साढ़े नौ सौ बरस)।

فَاَخَذَهُمُ الطُّوْفَانُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿١٤﴾ فَاَنْجَيْنٰهُ

फिर उन को तूफ़ान ने पकड़ लिया इस हाल में के वो ज़ालिम थे। फिर हम ने उन्हें और कशती वालों को

وَ اَصْحٰبَ السَّفِيْنَةِ وَجَعَلْنٰهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٥﴾ وَاِبْرٰهِيْمَ

नजात दी और हम ने उसे तमाम जहान वालों के लिए निशानी बनाया। और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को

اِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ

जब के उन्हों ने अपनी क़ौम से फरमाया के अल्लाह की इबादत करो और उस से डरो। ये तुम्हारे लिए बेहतर है

اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٦﴾ اِنَّمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

अगर तुम जानते हो। अल्लाह के सिवा तुम सिर्फ बुतों को

اَوْثَانًا وَّتَخْلُقُوْنَ اِفْكًا ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ

पूजते हो और तुम सिर्फ झूठ घड़ते हो। यक़ीनन वो जिन की तुम अल्लाह के सिवा इबादत

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَمْلِكُوْنَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوْا عِنْدَ اللّٰهِ

करते हो वो तुम्हें रोज़ी देने के मालिक नहीं हैं, तो तुम अल्लाह के पास रोज़ी

الرِّزْقَ وَاعْبُدُوْهُ وَاشْكُرُوْا لَهٗ ؕ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿١٧﴾

तलब करो और उसी की इबादत करो और उसी का शुक्र अदा करो। उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे।

وَاِنْ تُكَذِّبُوْا فَقَدْ كَذَّبَ اُمَمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ؕ وَمَا

और अगर तुम झुठलाओ तो तुम से पेहले कई उम्मतों ने झुठलाया। और रसूल के

عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿١٨﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ

ज़िम्मे सिवाए साफ़ साफ़ पहोंचा देने के कुछ भी नहीं। क्या उन्हों ने देखा नहीं के अल्लाह

يُبْدِئُ اللّٰهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ

कैसे मख़लूक़ को पेहली मरतबा पैदा करता है, फिर उस को दोबारा पैदा करेगा। यक़ीनन ये अल्लाह पर

يَسِيْرٌ ﴿١٩﴾ قُلْ سِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ

आसान है। आप फरमा दीजिए के तुम ज़मीन में चलो फिरो, फिर देखो के कैसे

بَدَاَ الْخَلْقَ ثُمَّ اللّٰهُ يُنْشِئُ النَّشْاَةَ الْاٰخِرَةَ ؕ

उस ने मख़लूक़ को पेहली मरतबा पैदा किया, फिर अल्लाह आखिरी बार ज़िन्दा कर के उठाएगा।

اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٠﴾ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ

यक़ीनन अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत वाला है। वो अज़ाब दे जिसे चाहे

وَيَرْحَمُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاِلَيْهِ تُقْلَبُوْنَ ﴿٢١﴾ وَمَآ اَنْتُمْ

और रहम करे जिस पर चाहे। और उसी की तरफ तुम्हें पलट कर जाना है। और तुम ज़मीन में

بِمُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ ۫ وَمَا لَكُمْ

(भाग कर) अल्लाह को आजिज़ नहीं कर सकते और न आसमान में (चढ़ कर)। और तुम्हारे लिए

مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِىٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿٢٢﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا ع ١٤

अल्लाह के अलावा कोई दोस्त और मददगार नहीं। और जो अल्लाह की

بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَلِقَآئِهٖٓ اُولٰٓئِكَ يَئِسُوْا مِنْ رَّحْمَتِىْ

आयतों के और उस की मुलाक़ात के मुन्किर हैं वो मायूस हैं मेरी रहमत से

وَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢٣﴾ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ

और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। फिर उन की क़ौम का जवाब नहीं था

اِلَّآ اَنْ قَالُوا اقْتُلُوْهُ اَوْ حَرِّقُوْهُ فَاَنْجٰىهُ اللّٰهُ

मगर ये के उन्हों ने कहा के तुम उसे क़त्ल कर दो या जला दो, फिर अल्लाह ने उन्हें आग से

مِنَ النَّارِ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَقَالَ

बचा लिया। यक़ीनन उस में कई निशानियाँ हैं ऐसी क़ौम के लिए जो ईमान लाती है। और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम)

اِنَّمَا اتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْثَانًا ۙ مَّوَدَّةَ

ने फरमाया के तुम ने अल्लाह के सिवा सिर्फ बुत बना रखे हैं, आपस की

بَيْنِكُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُ

दोस्ती की बिना पर दुन्यवी ज़िन्दगी में। फिर क़यामत के दिन तुम में से

بَعْضُكُمْ بِبَعْضٍ وَّيَلْعَنُ بَعْضُكُمْ بَعْضًا ۫ وَّمَاْوٰىكُمُ

एक दूसरे का इन्कार करोगे और तुम में से एक दूसरे पर लानत करोगे। और तुम्हारा ठिकाना

النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٢٥﴾ فَاٰمَنَ لَهٗ لُوْطٌ ۘ وقف لازم

दोज़ख होगा और तुम्हारे लिए कोई मददगार नहीं होगा। फिर इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) पर ईमान लाए लूत (अलैहिस्सलाम)।

وَقَالَ اِنِّىْ مُهَاجِرٌ اِلٰى رَبِّىْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِيْزُ

और कहा के मैं अपने रब की तरफ हिजरत कर रहा हूँ। यक़ीनन वो ज़बर्दस्त है, हिक्मत

الْحَكِيْمُ ﴿٢٦﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَ يَعْقُوْبَ وَجَعَلْنَا

वाला है। और हम ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को इसहाक़ और याक़ूब अता किए और हम ने

فِيْ ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ وَاٰتَيْنٰهُ اَجْرَهٗ

उन की औलाद में नुबूव्वत और किताब रख दी। और हम ने उन्हें उन का अज्र दिया

فِي الدُّنْيَا ۚ وَاِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٢٧﴾

दुन्या में। और यक़ीनन वो आखिरत में सुलहा में से होंगे।

وَ لُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ ز

और लूत (अलैहिस्सलाम) को (भी) जब उन्हों ने अपनी क़ौम से फरमाया के यक़ीनन तुम ऐसी बेहयाई करते हो

مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٨﴾ اَىِٕنَّكُمْ

जो तमाम जहान वालों में से किसी ने तुम से पेहले नहीं की। क्या तुम

لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُوْنَ السَّبِيْلَ ۙ وَتَاْتُوْنَ

मर्दों के पास आते हो और तुम डाका डालते हो? और तुम

فِيْ نَادِيْكُمُ الْمُنْكَرَ ؕ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ

अपनी मजलिसों में बुरी हरकतें करते हो? फिर उन की क़ौम का जवाब नहीं हुवा

اِلَّآ اَنْ قَالُوا ائْتِنَا بِعَذَابِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتَ

मगर ये के उन्हों ने कहा के तुम हमारे पास अल्लाह का अज़ाब ले आओ अगर तुम

مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٢٩﴾ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ عَلَى الْقَوْمِ

सच्चों में से हो। लूत (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के ऐ मेरे रब! इस मुफ़सिद क़ौम के खिलाफ तू मेरी

الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٣٠﴾ وَلَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَآ اِبْرٰهِيْمَ ع ١٥

नुसरत फरमा। और जब हमारे भेजे हुए फरिशते इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के पास बशारत

بِالْبُشْرٰى ۙ قَالُوْٓا اِنَّا مُهْلِكُوْٓا اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ ۚ

ले कर आए, तो उन्हों ने कहा के हम इस बस्ती वालों को हलाक करने वाले हैं।

اِنَّ اَهْلَهَا كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿٣١﴾ قَالَ اِنَّ فِيْهَا لُوْطًا ؕ

इस लिए के यहाँ वाले ज़ालिम हैं। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के उस में लूत (अलैहिस्सलाम) भी हैं।

قَالُوْا نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَنْ فِيْهَا ۫ لَنُنَجِّيَنَّهٗ وَ اَهْلَهٗٓ

फरिशते केहने लगे हम खूब जानते हैं उन को जो उस बस्ती में है। हम लूत (अलैहिस्सलाम) और उन के मानने

اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۖ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٣٢﴾ وَلَمَّآ اَنْ

वालों को बचा लेंगे मगर उन की बीवी। ये हलाक होने वालों में से होगी। और जब

جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِيْٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا

हमारे भेजे हुए फरिशते लूत (अलैहिस्सलाम) के पास आए तो उन की वजह से वो ग़मगीन और तंगदिल हुए

وَّقَالُوْا لَا تَخَفْ وَلَا تَحْزَنْ ۫ اِنَّا مُنَجُّوْكَ وَاَهْلَكَ

और उन फरिशतों ने कहा के आप न डरिए, न ग़म कीजिए। हम आप को और आप के मानने वालों को बचा लेंगे

اِلَّا امْرَاَتَكَ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٣٣﴾ اِنَّا مُنْزِلُوْنَ

मगर आप की बीवी को, ये हलाक होने वालों में से होगी। यक़ीनन हम इस बस्ती वालों पर

عَلٰٓى اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا

आसमान से अज़ाब उतारेंगे इस वजह से के वो (फासिक़ हैं)

يَفْسُقُوْنَ ﴿٣٤﴾ وَلَقَدْ تَّرَكْنَا مِنْهَآ اٰيَةًۢ بَيِّنَةً لِّقَوْمٍ

नाफरमान हैं। यक़ीनन हम ने उस बस्ती की कुछ वाज़ेह निशानी अक़्ल वालों के लिए

يَّعْقِلُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۙ فَقَالَ

रेहने दी है। और मदयन की तरफ भेजा उन के भाई शुऐब (अलैहिस्सलाम) को। शुऐब (अलैहिस्सलाम)

يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَارْجُوا الْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَلَا تَعْثَوْا

ने फरमाया ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाह की इबादत करो और तुम आखिरी दिन की उम्मीद रखो और तुम ज़मीन में

فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿٣٦﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ

फसाद फैलाते हुए मत फिरो। फिर उन्हों ने उन को झुठलाया, फिर उन को ज़लज़ले ने पकड़ लिया,

فَاَصْبَحُوْا فِىْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٣٧﴾ وَعَادًا وَّثَمُوْدَا۟

फिर वो अपने घरों में घुटने के बल औन्धे पड़े रेह गए। और आद और समूद को हलाक किया

وَقَدْ تَّبَيَّنَ لَكُمْ مِّنْ مَّسٰكِنِهِمْ ۫ وَزَيَّنَ لَهُمُ

और तुम्हारे सामने उन के घरों में से कुछ साफ नज़र आते हैं। और शैतान ने उन

الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ

के लिए उन के आमाल मुज़य्यन किए, फिर उन को रास्ते से रोक दिया

وَكَانُوْا مُسْتَبْصِرِيْنَ ﴿٣٨﴾ وَ قَارُوْنَ وَ فِرْعَوْنَ

हालांके वो होशयार थे। और क़ारून और फिरऔन

وَهَامٰنَ ۫ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ

और हामान को हलाक किया। यक़ीनन मूसा (अलैहिस्सलाम) उन के पास मोअजिज़ात ले कर आए,

فَاسْتَكْبَرُوْا فِى الْاَرْضِ وَمَا كَانُوْا سٰبِقِيْنَ ۖ ﴿٣٩﴾

फिर उन्हों ने ज़मीन में बड़ा बनना चाहा और वो (भाग कर) न निकल सके।

فَكُلًّا اَخَذْنَا بِذَنْۢبِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِ

फिर सब को हम ने उन के गुनाहों की वजह से पकड़ लिया। फिर उन में से किसी पर हम ने कंकर का तूफान

حَاصِبًا ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ اَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ ۚ وَمِنْهُمْ

भेजा। और उन में से किसी को चीख ने पकड़ लिया। और उन में से

مَّنْ خَسَفْنَا بِهِ الْاَرْضَ ۚ وَ مِنْهُمْ مَّنْ اَغْرَقْنَا ۚ

किसी को हम ने ज़मीन में धंसा दिया। और उन में से वो भी थे जिन को हम ने ग़र्क़ किया।

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ

और अल्लाह ऐसा नहीं है के उन पर ज़ुल्म करे लेकिन वो खुद अपनी जानों पर ज़ुल्म

يَظْلِمُوْنَ ﴿٤٠﴾ مَثَلُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ

करते थे। उन लोगों का हाल जिन्हों ने अल्लाह के सिवा हिमायती

اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ كَمَثَلِ الْعَنْكَبُوْتِ ۚ اِتَّخَذَتْ بَيْتًا ؕ

बना लिए हैं मकड़ी की तरह है, जिस ने जाला बनाया।

وَاِنَّ اَوْهَنَ الْبُيُوْتِ لَبَيْتُ الْعَنْكَبُوْتِ ۘ لَوْ كَانُوْا وقف لازم

और यक़ीनन घरों में सब से कमज़ोर (बूदा) मकड़ी का जाला है। काश के वो

يَعْلَمُوْنَ ﴿٤١﴾ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُوْنَ

जानते। यक़ीनन अल्लाह जानता है जिन चीज़ों को अल्लाह के

مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَىْءٍ ؕ وَ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٤٢﴾

सिवा ये पुकारते हैं। और अल्लाह ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है।

وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۚ وَمَا يَعْقِلُهَآ

और ये मिसालें हैं जिन को हम इन्सानों के लिए बयान करते हैं। और सिर्फ इल्म वाले

اِلَّا الْعٰلِمُوْنَ ﴿٤٣﴾ خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ

ही उसे समझते हैं। आसमानों और ज़मीन को अल्लाह ने हक़ के खातिर पैदा

بِالْحَقِّ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٤﴾ ع ٤

किया। यक़ीनन उस में ईमान लाने वालों के लिए निशानी है।